Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अनुसंधान पद्धति में नवीन प्रतिमान विस्थापन : राजनीति विज्ञान के संदर्भ में

पूनम चौधरी*

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) PMCoE,शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध पत्र 21वीं सदी के राजनीति विज्ञान में अनुसंधान पद्धतियों में आए युगांतरकारी 'नवीन प्रतिमान विस्थापन' (New Paradigm Shift) का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। यह अध्ययन रेखांकित करता है कि कैसे सूचना–प्रौद्योगिकी क्रांति और राजनीतिक व्यवहार के 'भौतिक' से 'डिजिटल' जगत में स्थानांतरण ने पारंपरिक एवं व्यवहारवादी शोध प्रविधियों की सीमाओं को उजागर किया है। शोध पत्र यह स्थापित करता है कि समकालीन राजनीति विज्ञान अब 'कम्प्यूटेशनल यथार्थवाद' के दौर में प्रवेश कर चुका है, जहाँ मिश्रित पद्धति (Mixed Methods), बिग डेटा एनालिटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और नेटवर्क विश्लेषण,भू–स्थानिक विश्लेषण, डिजिटल नृविज्ञान ज्ञान–निर्माण के प्रमुख उपकरण बन गए है। ये नवीन पद्धतियां विषय को वर्णनात्मक से बदलकर 'भविष्यवाणीपरक' और 'कारणात्मक' बनाने में सक्षम है। साथ ही, यह शोध इस तकनीकी प्रतिमान के नैतिक और सामाजिक निहितार्थों विशेषकर डिजिटल डिवाइड, निजता के संकट और एल्गोरिथ्मिक पूर्वाग्रह का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। निष्कर्षत:, यह अध्ययन तकनीक और मानवीय मूल्यों के मध्य एक 'संश्लेषितदृष्टिकोण' (Synthesized Approach) की वकालत करता है, ताकि 'डेटा की शीतलता में मानवीय मूल्यों की ऊष्मा' को संरक्षित रखते हुए अनुसंधान को अधिक समावेशी और प्रासंगिक बनाया जा सके।

शब्द कुंजी – राजनीति विज्ञान, अनुसंधान पद्धति, प्रतिमान विस्थापन, बिग डेटा, कम्प्यूटेशनल विश्लेषण, मिश्रित पद्धति, डिजिटल डिवाइड।

प्रस्तावना – राजनीति विज्ञान, सामाजिक विज्ञान की वह शाखा है जो मानव के राजनीतिक पक्ष का सूक्ष्म अन्वेषण करती है।

दीर्घकाल तक राजनीति विज्ञान की अनुसंधान पद्धतियों में एक स्थिरता विद्यमान रही , जो इस मान्यता पर आधारित थी कि चरों के सटीक मापन से राजनीतिक परिणामों की भविष्यवाणी संभव है। किन्तु, 21वीं सदी के सूचना–प्रौद्योगिकी युग में यह परिदृश्य पूर्णत: परिवर्तित हो गया है और विषय को अनुसंधान के स्तर पर संकटका सामना करना पड़ा, संकट– मानव जीवन के सभी पक्षों के डिजिटल होने के बाद उनके विश्लेषण की तकनीक काथा। अब राजनीतिक व्यवहार एवं गतिविधियाँ भौतिक जगत से डिजिटल जगत में स्थानांतरित हो चुकी है, जिसे पारंपरिक प्रणालियों द्वारा पूर्णत: समझना असंभव है।

परिणामस्वरूप, राजनीति विज्ञान की अनुसंधान पद्धति मेंनवीन प्रतिमान विस्थापन (New Paradigm Shift) दृष्टिगोचर हो रहा है। यह नया प्रतिमान न केवल पद्धतिगत बहुलवाद (Methodological Pluralism) को स्वीकार करता है, बल्कि कम्प्यूटेशनल तकनीकों, बिग डेटा एनालिटिक्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित विश्लेषणको भी ज्ञान–निर्माण की मुख्यधारा में स्थापित करता है। ये नवीन प्रविधियाँ राजनीति विज्ञान को समकालीन वैश्विक चुनौतियों के प्रति अधिक समावेशी, सटीक और प्रासंगिक बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।

अनुसंधान पद्धति – प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक रूप से द्वितीयक स्रोतों यथा अकादमिक पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, और तकनीकी रिपोर्ट्स के मेटा–विश्लेषण पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध पत्रगुणात्मक और विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रविधि पर आधारित है, जिसका मुख्य उद्देश्य राजनीति विज्ञान में हो रहे पद्धतिगत परिवर्तनों का सैद्धांतिक अन्वेषण करना है। साथ ही इसमें ऐतिहासिक और तुलनात्मक विधियोंका प्रयोग कर परंपरागत, आधुनिक और समकालीन प्रतिमानों के मध्य विकास और अंतर को रेखांकित किया गया है। साथ ही, अंतर्विषयक उपागम अपनाते हुए कंप्यूटर विज्ञान और सांख्यिकी की अवधारणाओं का राजनीति विज्ञान के संदर्भ मेंविषय–वस्तु विश्लेषण किया गया है, ताकि नवीन 'प्रतिमान विस्थापन' की प्रकृति और चुनौतियों को स्पष्ट किया जा सके।

शोध का उद्देश्य:

1. अनुसंधान पद्धतियों में आए परिवर्तनोंको पहचानना।
2. समकालीन अनुसंधान पद्धतियों को समझना।

राजनीति विज्ञान में अनुसंधान पद्धतियों का उद्भिकासरू परंपरागत पद्धतियों से कम्प्यूटेशनल विश्लेषण तक

राजनीति विज्ञान एक गतिशील अनुशासन है, जिसकी अनुसंधान पद्धतियों ने समय के साथ एक लंबी और जटिल विकास यात्रा तय की है। ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण से, इस यात्रा को तीन व्यापक कालखंडों में वर्गीकृत किया जा सकता हैरू परंपरागत, आधुनिक और समकालीन। प्रत्येक चरण ने राजनीतिक वास्तविकता को समझने के लिए भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण और उपकरण अपनाए है।

1. परंपरागत अनुसंधान पद्धतियांरू मानकीय और संस्थागत दृष्टिकोण व्यवहारवादी क्रांति के उदय से पूर्व की समस्त शोध प्रविधियों को 'परंपरागत पद्धतियों' की श्रेणी में रखा जाता है। इन पद्धतियों का मूल स्वर मानकीय (Normative) और वर्णनात्मक था।

1. **दार्शनिक पद्धति (Philosophical Method):** इस पद्धति के अंतर्गत राजनीतिक यथार्थ के विश्लेषण के स्थान पर 'आदर्श व्यवस्था' की परिकल्पना को प्राथमिकता दी गई। यह तर्क और नैतिकता पर आधारित थी, न कि तथ्यों पर।
2. **ऐतिहासिक पद्धति (Historical Method):** इसमें इतिहास को राजनीति की प्रयोगशाला माना गया। शोधकर्ता अतीत की घटनाओं के आधार पर वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य का विश्लेषण करते थे और भविष्य के लिए निष्कर्ष निकालते थे।
3. **कानूनी और संस्थागत पद्धति (Legal & Institutional Method):** इस उपागम ने राज्य के औपचारिक ढांचे संविधान, विधायिका और न्यायपालिकाकृके अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया।
4. **तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method):** विभिन्न देशों की राजनीतिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से सामान्य सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया।

परंपरागत अनुसंधान पद्धतियों की सीमाएं – यद्यपि इन पद्धतियों ने विषय को दार्शनिक आधार प्रदान किया, किन्तु इनकी गंभीर सीमाएं थी। इन पद्धतियों में 'वर्तमान यथार्थ' की अपेक्षा 'आदर्श' और 'ऐतिहासिक विवरणों' पर अत्यधिक बल दिया गया। सबसे महत्वपूर्ण त्रुटि यह थी कि इन्होंने केवल संस्थाओं के बाह्य ढांचे का अध्ययन किया, किन्तु उन संस्थाओं को संचालित करने वाले मानव व्यवहार (Human Behaviour) की पूर्णत: उपेक्षा की। ये पद्धतियां राजनीतिक परिवर्तन (Political Change) की गतिशीलता को समझने में असमर्थ सिद्ध हुई।

आधुनिक अनुसंधान पद्धतियां: व्यवहारवादी क्रांति और अनुभवजन्य परीक्षण – बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में राजनीति विज्ञान ने एक प्रमुख 'प्रतिमान बदलाव' (Paradigm Shift) का अनुभव किया।यह कालखंड दो प्रमुख बौद्धिक आंदोलनों व्यवहारवाद **(Behavioralism)** और उत्तर-व्यवहारवाद **Post-Behavioralism)** का साक्षी रहा।'व्यवहारवादी क्रांति' **(Behavioural Revolution)** के आगमन के साथ ही शोध की प्राथमिक इकाई 'संस्था' से बदलकर 'व्यक्ति' और उसका 'राजनीतिक व्यवहार' हो गई।

इस चरण में, और बाद में उभरे उत्तर-व्यवहारवाद **(Post-Behavioralism)** के अंतर्गत, राजनीति विज्ञान को श्प्रासंगिक विज्ञानश बनाने का प्रयास किया गया। शोध के केंद्रीय उपकरणों के रूप में निम्नलिखित विधियों को प्रतिष्ठित किया गया:

1. अनुभवजन्य परीक्षण (Empirical Testing)।
2. क्षेत्र-अध्ययन (Field Studies) और केस स्टडी (Case Study)।
3. मात्रात्मक विधियाँ (Quantitative Methods)।
4. सर्वेक्षण और सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis)।

आधुनिकअनुसंधान पद्धतियों की सीमाएं यद्यपि इन पद्धतियों ने विषय में वैज्ञानिकता का समावेश किया, किन्तु इनकी भी अपनी सीमाएं थी। अत्यधिक वैज्ञानिकता के प्रयास में, इन पद्धतियों ने जटिल सत्ता-संबंधों (Power Relations) की अनदेखी की। 'अति-सामान्यीकरण' (Over-generalization) की प्रवृत्ति और केवल मापनीय तथ्यों (Measurable Facts) पर जोर देने के कारण, गुणात्मक अर्थों (Qualitative Meanings) की उपेक्षा हुई।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये पद्धतियां 21वीं सदी की 'डिजिटल गतिशीलता' जैसे सोशल मीडिया का प्रभाव और बिग डेटा को समाहित करने और विश्लेषण करने में अक्षम रही।

समकालीन अनुसंधान पद्धतियाँ : एकीकृत और तकनीकी-बहुलवादी 21वीं सदी के राजनीति विज्ञान में अनुसंधान केवल उपकरणों का बदलाव नहीं है, बल्कि यह वास्तविकता को देखने के नजरिए में एक नवीन प्रतिमान विस्थापन (New Paradigm Shift) है। परंपरागत 'दार्शनिक' और आधुनिक 'व्यवहारवादी' युग से आगे बढ़ते हुए, समकालीन अनुसंधान एक 'एकीकृत और तकनीकी-बहुलवादी' प्रतिमान की ओर स्थानांतरित हो गया है। इस नए प्रतिमान को निम्नलिखित आयामों के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. **एकल पद्धति से 'पद्धतिगत बहुलवाद' की ओर (मिश्रित पद्धति)-** नवीन प्रतिमान ने दशकों पुराने 'मात्रात्मक बनाम गुणात्मक' द्वंद्व को समाप्त कर दिया है।अब शोध केवल आंकड़ों (मात्रात्मक) या केवल विचारों (गुणात्मक) तक सीमित नहीं है।समकालीन प्रतिमान ने इस विभाजन को समाप्त कर 'पद्धतिगत सहजीविता' (Methodological Symbiosis) को जन्म दिया है।मिश्रित पद्धति के माध्यम से 'ट्रायंगुलेशन' (Triangulation) को अपनाया गया है। यह प्रतिमान मानता है कि राजनीतिक सत्य बहुआयामी होता है। उदाहरण के लिए, चुनाव विश्लेषण में अब 5000 लोगों के 'सर्वेक्षण डेटा' (विस्तार) के साथ 50 लोगों के 'गहन साक्षात्कार' (गहराई) को अनिवार्य माना जाता है, ताकि सांख्यिकीय रुझानों के पीछे छिपे मानवीय कारणों को समझा जा सके।स्पष्ट है कि यह 'डेटा के विस्तार' (Breadth) और 'संदर्भ की गहराई' (Depth) का अद्भुत संगम है, जो निष्कर्षों की वैधता को बढ़ाता है।
2. **'डेटा अभाव' से 'कम्प्यूटेशनल विश्लेषण' की ओर (तकनीकी प्रतिमान)-** यह समकालीन शोध पद्धति का सबसे क्रांतिकारी पहलू है।पुराना प्रतिमान सीमित डेटा (Small Data) पर निर्भर था जिसे मानव मस्तिष्क संसाधित कर सकता था। नया प्रतिमान 'बिग डेटा' और 'एल्गोरिथ्मिक क्षमता' पर आधारित है।

- **टेक्स्टडेटा के रूप में नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग:** राजनीति विज्ञान अब भाषा को केवल साहित्य नहीं, बल्कि 'डेटा' मानता है। 'नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग' (NLP) तकनीक के आगमन से शोधकर्ता अब लाखों संसदीय बहसों और दस्तावेजों का एक साथ विश्लेषण कर रहे हैं, जो पहले मानवीय क्षमता से परे था।
- **सेंटीमेंट एनालिसिस:** यह पद्धति राजनीतिक विमर्श के 'भावनात्मक तापमान' को मापती है। अब जनमत केवल वोट के माध्यम से नहीं, बल्कि सोशल मीडिया पर व्यक्त भावनाओं के एल्गोरिथ्मिक मापन द्वारासमझा जाता है।एल्गोरिदम यह पता लगाते है कि किसी नीति के प्रति जनता का मूड 'सकारात्मक', 'नकारात्मक' या 'तटस्थ' है। यह 'जनमत' (Public opinion) को मापने का एक गतिशील और रीयल-टाइम बैरोमीटर बन गया है।
- **नेटवर्क विश्लेषण:** यह व्यक्ति-केंद्रित अध्ययन से हटकर 'संबंध-केंद्रित' अध्ययन की ओर बदलाव है। यह समाज को एक नेटवर्क के रूप में देखता है, जो विशेष रूप से डिजिटल दुनिया में ध्रुवीकरण और 'इको-चौम्बर्स' (Eco Chambers) की संरचना को समझने के लिए अपरिहार्य है। इसके माध्यम से शोधकर्ता यह देख सकते है कि कैसे समान विचारधारा वाले लोग गुटों (Clusters) में बंट जाते हैं और विरोधी विचारों से कट जाते है।उदाहरण

के लिए Zakaria Mehrab एवं अन्य (2024)ने यूक्रेन युद्ध के दौरान शरणार्थियों (Refugees) के पलायन प्रतिरूप के अध्ययन के लिए अपने शोध पत्र में इस तकनीक का उपयोग कर पाया कि पलायन में लोग घटनाओं की बजाय सामाजिक संबंधों को प्राथमिकता देते हैं।

- **सिमुलेशन और एजेंट-बेस्ड मॉडलिंग (ABM):** यह 'अवलोकन' से 'आभासी प्रयोग' की ओर विस्थापन है। चूंकि समाज पर वास्तविक प्रयोग अनैतिक हैं, इसलिए कंप्यूटर जनित 'एजेंट्स' के माध्यम से राजनीतिक संकटों का सिमुलेशन (ABM) करके भविष्यवाणियां की जाती है। उदाहरण के लिए कंप्यूटर जनित हजारों 'कृत्रिम एजेंटों' के माध्यम से यह परीक्षण किया जाता है कि राजनीतिक अस्थिरता जैसी स्थितियों में समाज कैसे प्रतिक्रिया देगा। यह राजनीति विज्ञान को 'वर्णनात्मक' से 'भविष्यवाणीपरक' (Predictive) विज्ञान में बदल रहा है।उदाहरण के लिए Lingfeng Zhou और अन्य(2025) ने अपने शोध पत्र के माध्यम से इस तकनीक का उपयोग कर 2024 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों का अध्ययन किया।
- **भू-स्थानिक विश्लेषण (Geospatial Analysis) :** राजनीति शून्य में नहीं होती, उसका एक भौगोलिक संदर्भ होता है। समकालीन शोध में 'जियोग्राफिक इनफॉर्मेशन सिस्टम' (GIS) का प्रयोग बढ़ा है।इसके द्वारा मतदान व्यवहार, हिंसा या विकास परियोजनाओं के वितरण को भौगोलिक मानचित्रों पर प्लॉट किया जाता है। यह समझने में मदद करता है कि 'स्थान' और 'राजनीति' के बीच क्या सह-संबंध है, जिसे पारंपरिक सांख्यिकी अक्सर नजरअंदाज कर देती थी।उदाहरण के लिएविनीत चतुर्वेदी एवं अन्य (2025) ने अपने शोध पत्र में युद्धग्रस्त अफगानिस्तान (काबुल) में नए शहर को बसाने के लिए GIS और सिमुलेशन का प्रयोग किया और अध्ययन किया कि अलग-अलग आय वर्ग और परिवार के आकार वाले 'एजेंट्स' शहर में कहाँ रहना पसंद करेंगे।
- **डिजिटल नृविज्ञान (Digital Ethnography) :** चूँकि राजनीतिक समुदाय अब ऑनलाइन बन रहे है, अत: पारम्परिक 'क्षेत्र कार्य' (Field Work) का स्वरूप भी बदल गया है। शोधकर्ता अब भौतिक गाँवों के बजाय 'डिजिटल समुदायों' (जैसे व्हाट्सएप ग्रुप्स, ऑनलाइन फोरम) का सदस्य बनकर उनका अवलोकन करते है। यह डिजिटल युग में राजनीतिक समाजीकरणके प्रसार को समझने की सबसे सशक्त गुणात्मक विधि है।

स्पष्ट है कि समकालीन पद्धतियाँकृबिग डेटा से लेकर सिमुलेशन तक शोधकर्ताओं को वह 'सूक्ष्मदर्शी' और 'दूरबीन' दोनों प्रदान करती हैं, जिनसे राजनीतिक ब्रह्मांड के अणु (व्यक्ति) और आकाशगंगा (वैश्विक व्यवस्था) दोनों का सटीक अध्ययन संभव है।

निष्कर्ष – राजनीति विज्ञान में अनुसंधान पद्धतियों की ऐतिहासिक विकास यात्रा का सिंहावलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह अनुशासन अपनी शैशवावस्था के आदर्शवादी दार्शनिक चिंतन से निकलकर, व्यवहारवादी अनुभववाद के दौर से गुजरते हुए, अब 21वीं सदी के 'कम्प्यूटेशनल यथार्थवाद' (Computational Realism) के युग में प्रवेश कर चुका है। प्रस्तुत अध्ययन ने यह स्थापित किया है कि अनुसंधान पद्धतियों में आया यह बदलाव केवल उपकरणों का सतही परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक वास्तविकता को देखने, समझने और विश्लेषित करने के नजरिए में एक मौलिक 'नवीन प्रतिमान विस्थापन' (New Paradigm Shift) है।

परंपरागत पद्धतियों ने जहाँ हमें राज्य और संस्थाओं का नैतिक और कानूनी ढांचा प्रदान किया, वहीं व्यवहारवादी क्रांति ने 'व्यक्ति' को शोध के केंद्र में लाकर विषय को वैज्ञानिकता की ओर मोड़ा। किन्तु, वर्तमान समय में सूचना-प्रौद्योगिकी की क्रांति ने मानव जीवन को भौतिक से 'डिजिटल' बना दिया है। आज जनमत का निर्माण केवल चौपालों पर नहीं, बल्कि सोशल मीडिया के 'इको-चौम्बर्स' में हो रहा हैय क्रांतियों की रूपरेखा एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग ऐप्स पर तैयार हो रही है। इस अभूतपूर्व परिवर्तन ने राजनीति विज्ञान के समक्ष एक अस्तित्वगत संकट खड़ा कर दिया था, जिसका समाधान 'नवीन प्रतिमान' के रूप में सामने आया है। यह नवीन प्रतिमान 'पद्धतिगत बहुलवाद' (Methodological Pluralism) का उत्सव है, जो श्मिश्रित पद्धतिश् के माध्यम से सांख्यिकीय विस्तार और गुणात्मक गहराई का संगम करता है। यह अनुशासन को महज 'वर्णनात्मक' से बदलकर 'भविष्यवाणीपरक' (Predictive) और 'कारणात्मक' (Causal) बनाने की क्षमता रखता है। अब हम केवल यह नहीं जानते कि 'क्या हुआ', बल्कि हम वैज्ञानिक सटीकता के साथ यह भी जान सकते हैं कि 'क्यों हुआ' और 'भविष्य में क्या हो सकता है'।

तथापि, विज्ञान की किसी भी नई शाखा की तरह, इस डिजिटल प्रतिमान को अंतिम सत्य मान लेना एक बौद्धिक भूल होगी। यद्यपि कम्प्यूटेशनल तकनीकों और बिग डेटा ने राजनीति विज्ञान को नई ऊंचाइयां दी हैं, परंतु इसके 'अंधेरे पक्षों' (Dark Sides) का आलोचनात्मक विश्लेषण अत्यंत अनिवार्य है। सबसे पहली और गंभीर चुनौती 'डिजिटल डिवाइड' और 'प्रतिनिधित्व के संकट' की है। नवीन अनुसंधान पद्धतियां मुख्य रूप से जिस 'बिग डेटा' (सोशल मीडिया, इंटरनेट गतिविधि) पर निर्भर हैं, वह दुनिया की एक बड़ी आबादी विशेषकर विकासशील देशों के ग्रामीण, गरीब और बुजुर्ग वर्गकृको शामिल नहीं करता। यदि हम केवल डिजिटल डेटा के आधार पर राजनीतिक निष्कर्ष निकालेंगे, तो वह निष्कर्ष स्वाभाविक रूप से 'कुलीन वर्गीय' और 'शहरी' होगा। यह स्थिति 'डेटा में अदृश्य' (Data Invisible) लोगों की आवाज को दबा सकती है, जो राजनीति विज्ञान के मूल लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत है।

इसके अतिरिक्त, निजता और निगरानी का नैतिक प्रश्नभी मुंह बाये खड़ा है। कम्प्यूटेशनल विश्लेषण का आधार ही लोगों के निजी डेटा का खनन (Data Mining) है। 'कैम्ब्रिज एनालिटिका' जैसी घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि कैसे शोध पद्धतियों का दुरुपयोग करके मतदाताओं को मनोवैज्ञानिक रूप से भ्रमितकिया जा सकता है। जब राजनीति विज्ञान के शोधकर्ता सटीक 'भविष्यवाणी' करने की क्षमता हासिल कर लेते है, तो इस ज्ञान का उपयोग सत्ताधारी सरकारें विरोध को कुचलने या चुनावों को प्रभावित करने के लिए कर सकती है। यह भय उत्पन्न करता है कि कहीं यह अनुशासन 'मुक्ति के विज्ञान' के बजाय श्नियंत्रण के उपकरणश् में न बदल जाए।

तकनीकी स्तर पर, 'एल्गोरिथ्मिक पूर्वाग्रह' एक और बड़ी बाधा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) निष्पक्ष नहीं होतीय वह उसी ऐतिहासिक डेटा से सीखती है जो अक्सर पूर्वाग्रहों से भरा होता है। यदि डेटा दूषित है, तो AI मॉडल भी भेदभावपूर्ण परिणाम देगा और उसे 'वैज्ञानिक वैधता' का जामा पहना देगा। साथ ही, राजनीति विज्ञान अंतत: 'मनुष्य' का अध्ययन है जिसके पास भावनाएं, मूल्य और नैतिकता होती है। कम्प्यूटेशनल पद्धतियां मनुष्य को केवल एक 'डेटा पॉइंट' या 'एजेंट' में बदल देती है। 'सेंटीमेंट एनालिसिस' शब्दों को सकारात्मक या नकारात्मक में तो बांट सकता है, लेकिन वह उस

व्यंग्य, पीड़ा या सांस्कृतिक संदर्भ को नहीं समझ सकता जो उन शब्दों के पीछे छिपा है। आंकड़ों का अत्यधिक मोह विषय को उसकी 'मानवीय आत्मा' से वंचित कर सकता है।

समग्र विश्लेषण के आधार पर, भविष्य की राह न तो अतीत की ओर लौटने में है और न ही आँख मूंदकर तकनीक के पीछे भागने में। राजनीति विज्ञान का भविष्य 'द्वंद्व' में नहीं, बल्कि 'संश्लेषण' (Synthesis) में निहित है। भविष्य के शोधकर्ताओं को एक 'मानवीय–कम्प्यूटेशनल हाइब्रिड मॉडल' अपनाना होगा। उन्हें 'द्विभाषी' (Bilingual) होना होगा अर्थात उन्हें अरस्तू और प्लेटो के दर्शन का ज्ञान भी होना चाहिए और 'पायथन' (Python) जैसी कोडिंग भाषा की समझ भी। हमें 'बिग डेटा' की शक्ति चाहिए, लेकिन उसे 'मोटे डेटा' (Thick Data) के साथ संतुलित करना होगा।

निष्कर्षत:, राजनीति विज्ञान में आया यह नवीन प्रतिमान विस्थापन एक अपरिहार्य और स्वागत योग्य क्रांति है। इसने विषय को मृतप्राय होने से बचाया है और इसे 21वीं सदी के अनुकूल बनाया है। तकनीक को एक 'साध्य' (End) नहीं, बल्कि एक 'साधन' (Tool) माना जाना चाहिए। राजनीति विज्ञान का मूल उद्देश्य एक न्यायपूर्ण और बेहतर मानव समाज का निर्माण सदैव सर्वोपरि रहना चाहिए। जब तक तकनीक इस उद्देश्य की सेवा करती है, वह वरदान हैय जहाँ वह इस उद्देश्य पर हावी होने लगे, वहां आलोचनात्मक मानवीय विवेक का हस्तक्षेप अनिवार्य है। यही इस शोध यात्रा का सार है 'डेटा की शीतलता में मानवीय मूल्यों की ऊष्मा को जीवित रखना।'

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Salganik, M. J. (2017), Bit by Bit: Social Research in the Digital Age, Princeton University Press
2. Grimmer, J., & Stewart, B. M. (2013), Text as Data: The Promise and Pitfalls of Automatic Content Analysis Methods for Political Texts, Cambridge University Press
3. Ungherr, A. (2015), Analyzing Political Communication with Digital Trace Data: The Role of Twitter Messages in Social Science Research, Springer
4. Kuhn, T. S. (1962), The Structure of Scientific Revolutions, University of Chicago Press
5. King, G., Keohane, R. O., & Verba, S. (1994), Designing Social Inquiry: Scientific Inference in Qualitative Research, Princeton University Press
6. Dahl, R. A. (1961), The Behavioural Approach in Political Science: Epitaph for a Monument to a Successful Protest, American Political Science Review
7. Claudio A., Cioffi-Revilla, C., (2014), Introduction to Computational Social Science, Springer.
8. OECD, (2019), Artificial Intelligence in Society, OECD Publishing, Paris.
9. Lingfeng Zhou, Et al, (2025), FlockVote: LLM-Empowered Agent-Based Modeling for Simulating U.S. Presidential Elections.
10. Zakariya Mehrab et al, (2024), Network Agency: An Agent-based Model of Forced Migration from Ukraine.
11. Chaturvedi V., Walter Timo De Vries, (2025). Residential Location Preferences in a Post-Conflict Context: An Agent-Based Modeling Approach to Assess High-Demand Areas in Kabul New City, Afghanistan.
12. गाबा, ओ. पी. (2018),राजनीति विज्ञान की रूपरेखा. मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।
13. फाड़िया, बी. एल., और फाड़िया, कुलदीप (2020),राजनीति विज्ञान के मूल आधार,साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा।
14. कोठारी, सी. आर. (2004),अनुसंधान प्रविधि: सिद्धांत और प्रक्रिया,विश्व प्रकाशन।
15. जैन, बी. एम. (2015),राजनीति विज्ञान में अनुसंधान पद्धति,रिसर्च पब्लिकेशंस, जयपुर।
16. वर्मा, एस. पी.,आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत,विकास पब्लिशिंग हाउस।
17. Use of AI Platforms like: Google Gemini, Perplexity.

****